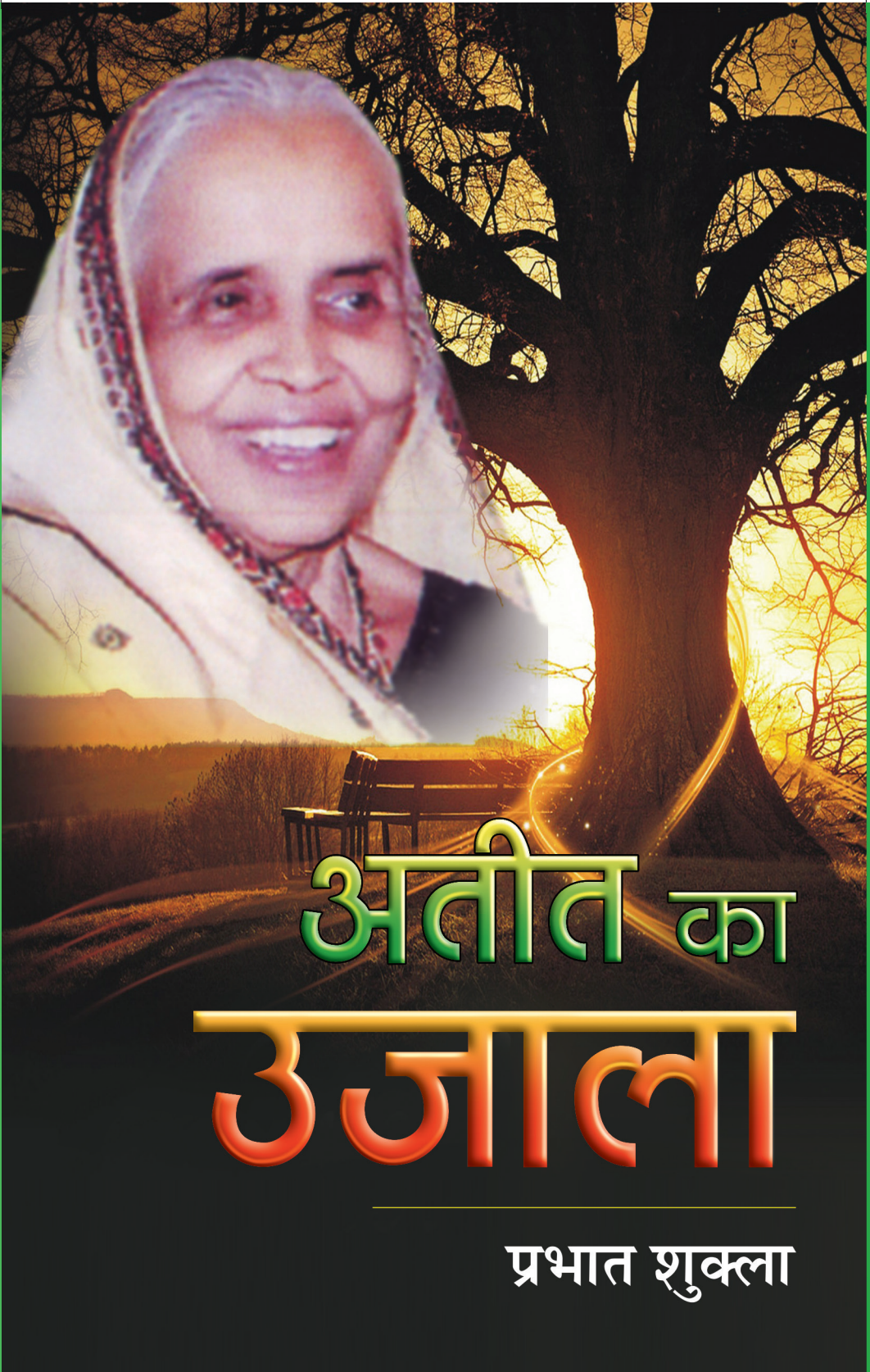

अतीत का उजाला

प्रभात शुक्ला

गुरुवे नमः

.... कृतज्ञ उद्‌बोधन

'माँ जैसे शब्द का आशय हर मानव के लिए अपना एक भिन्न महत्व और एहसास रखता है, हर कोई अपनी बौद्धिक क्षमता के आधार पर उसे परिभाषित करने का एक असंभव प्रयास करता है। इस एकाक्षरी मंत्र-शब्द का अर्थ दुनिया का कोई भी परिष्कृत शब्दकोष समझा नहीं पाता। यह अपने आप में कई रत्नों से पटा अथाह सागर है। इसकी गहराई नापने का कोई यंत्र नहीं है, एक छोर से दूसरी छोर को झांक पाना असंभव है। ऊपर समतल स्वरूप से अंदर की हलचल को परख पाना नामुमकिन है। 'माँ' आदि से अंत तक है, सृष्टि के निर्माण से समापन तक है। इसे सिर्फ एहसास और अनुभव किया जा सकता है। जहाँ तक मेरे जैसे एक अल्प (मुझ जैसे) बुद्धि वाले इंसान का सवाल है तो... मेरे लिए 'माँ' एक महाकाव्य है। रामायण, गीता, बाइबिल, कुरान है। सृष्टि के रचयिता ब्रम्हा, विष्णु, महेश है। पाक 'ग्रंथ साहिब' है। जिसे बार-बार पढ़ने दोहराने समझने का मन करता है, फिर भी सुनने समझने की प्यास बनी की बनी रहती है। माँ एक सभ्यता और संस्कृति की जीवंत जीती-जागती कहानी एवं दुर्लभ पुस्तकालय होती है।

विगत कुछ दिनों में सुना एवं संवेदनशील अखबारों में पढ़ा कि किसी ने अपनी जन्मदात्री को क्रूरता पूर्वक, चंद सिक्कों के खातिर अपने ही आँगन में दफन कर दिया.. ब्रम्ह के मानस पुत्र दानव कैसे हो गए... यह विचार उसके मस्तिष्क में कैसे तरंगित हुआ...? दूध का कर्ज उतारने की जगह... खून का बोझ वह आत्मा कैसे सहन करेगी...? खैर! घटना बड़ी पीड़ादायक थी उसकी पुनरावृत्ति कभी किसी देश काल युग में नहीं होनी चाहिए, का विचार ही इस किताब की आधार शिला है... प्रकृति की हरेक

माँ पूजनीय है, आदरणीय है, वंदनीय है।

वैसे तो इस किताब को एक पारिवारिक पृष्ठभूमि में तैयार कर पारिवारिक भाईचारा बढ़ाने, सामाजिक आदर्श, एकता सुदृढ़ करने और टूटते-बिखरते सामाजिक मूल्यों को फिर से एकत्रित करने के प्रयास के रूप में लिखा गया है, फिर भी यदि किसी पाठक को यह लगे कि प्रस्तुतकर्ता ने अपनी कल्पना को किसी भी सीमा रेखा से पार पहुँचा दिया है एवं जिससे कोई किसी व्यक्ति अथवा समाज विशेष आहत हुआ है तो उन प्रबुद्धजन को मेरा दण्डवत् प्रणाम है, साथ-साथ लेखन के प्रथम प्रयास पर संभव त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थना की भी अभिलाषा है।

उद्देश्य पारदर्शी है... हर माँ, हर कहीं पूजित हो, सम्मानित हो चाहे वह जीव-जंतु हो, चर-अचर जगत हो या फिर जगत जननी प्रकृति हो उनका हर कहीं सम्मान हो, सराहना हो... यदि कहीं वैचारिक क्षरण दर्शित हो जाए तो समय रहते उसका शोधन परिमार्जन तत्काल हो। इसी कड़ी में प्रकृति ने मुझे भी एक साधारण माँ के पुत्र होने का सुखद सौभाग्य प्रदान किया है। वह माँ! सिर्फ चौथी कक्षा तक शिक्षित थी, एक गौरवशाली परिवार का हिस्सा थी... देखते-देखते साधारण से असाधारण महिला बनी... गृहस्थ में रहकर महान जप-तप और साधना सम्पन्न की और विश्वकल्याण के लिए संकल्पित संस्था ''शांतिकुंज हरिद्वार'' गायत्री परिवार से जीवन भर जुड़ी रही। अपने आसपास यथासंभव सद्विचार, सदकर्म, सदवाक्य की सीख देती रही... अपनी सद्गति का नक्शामय रास्ता निर्धारित कर सभी कुटुम्ब जन बंधु-बांधव, नागरिकों को उज्जवल भविष्य का मंगल आशीष दे संसार से विदा हो गई।

शोक-संतप्त, बेटा-बहुओं, बेटी-दामाद, नाती-नातिन, दौहित्र, सगे-संबंधी, जान-पहचान पूरे परिवार के लिए ये घटना पीड़ादायक तो थी ही, साथ ही में किसी ''सिंधु घाटी'' जैसी पुरानी और कुलीन सभ्यता का अंत भी था, जो समय के साथ धूल की परतों में छुपती गई। समाज की किसी पीड़ादायक घटना से पीड़ित होने पर यादों के पत्थर से मैं टकरा गया... इच्छा हुई और तन्मयता से उस सभ्यता की खुदाई शुरू किया... तब मैंने उस सभ्यता को जितना पहले जानता था, उससे कहीं ज्यादा, कई गुना

विकसित परिष्कृत पाया- उसकी नगर व्यवस्था, सफाई व्यवस्था, स्नानागार, औजार, सामाजिक, सांस्कृतिक अवशेष... इत्यादि से धन्य और अभिभूत हुआ तो उसे प्रस्तुत किताब रूप में समेकित करने का प्रयास किया।

माता-पिता, गुरूजनों का ऋण तो मेरे अनुसार किसी भी कर्मकांड से चुकाया नहीं जा सकता, यदि ऐसा होता तो हम जैसे अल्पशिक्षित मन में संभव है अभिमान का भाव पनप जाता। इसलिए श्रद्धापूर्वक शास्त्र निर्देशित, यथोचित कर्मकाण्ड का पालन करते हुए अंतिम सांस तक माँ के एहसानों तले दबे रहना चाहता हूँ, हर जनम में उसे ही अपनी माँ के रूप में पाना चाहता हूँ।

माँ का प्रिय दोहा आज भी कानों में गुंजायमान है...

'मरना भला विदेश का, जहाँ न अपना कोय।

पशु-पक्षी भोजन करे, तन भंडारा होय।'

आज जो भी कुछ हूँ! माँ का आशीर्वाद है, उसका अमोघ वरदान है।

ओह! माँ! शत-शत नमन...

प्रभात शुक्ला

भरारी

पुनश्चः

हर बड़े और विशाल आयोजन का बिना सहयोग और प्रोत्साहन के करना असंभव होता है। इस कार्य में मुझे भी अपने बड़े भाई–, चाचा–चाची, बहन–जीजा, भाभियों, भांजे–भतीजे, बच्चे सहित पत्नी नम्रता, बिटिया–वन्या ओमजा का भरपूर सहयोग मिला। साथ में मित्र–मंडली से सहकर्मी देवजाय दत्ता, विपिन, राजेश, अनूप, शोभित, शुशांत, आशीष सिंह परिहार, अभिन्न साथी डॉ. देवेश शर्मा, दिनेश वर्मा, नवीन पांडे, ब्रजेश गौरहा, संतोष अग्रवाल, हर्ष दीवान, शैलेंद्र शर्मा, संजय शर्मा, आलोक दुबे, उत्तम दुबे, धमेंद्र, दीनू, टूटू मामा, संदीप बाबा, विवेक अग्रवाल, अशोक, सलील दीवान, अज्जु बहेरा, अज्जू शर्मा, आशू, आशीष मिश्रा, चन्द्रमौली मिश्रा, विनयधर दीवान, एस.सी. द्विवेदी, सी.पी. कश्यप सहित प्रकाशन हाउस के ऊर्जावान मृदुभाषी, सरल व्यक्तित्व आदरणीय सुधीर शर्मा, आकर्षक व्यक्ति के धनी श्रीमान अशोक शर्मा इंटरनेट का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। क्योंकि इनके सानिध्य मात्र से ही एक सकारात्मक ऊर्जा का संचार महसूस किया है।

प्रभात शुक्ला

पुण्या
(कटनिहिन भाभी)

- ओंकार प्रसाद शुक्ला

'पुण्या तू तो चली गई देकर गहरा घाव'

और समेट कर ले गई निज आँचल की छाँव।।

अर्थहीन जीवन जीने के लिए तुम हमें एक अपूरितघाव देकर महाप्रयाण के लिए निकल गई। यह भी नहीं सोचा कि तुम्हारी ममता की ठंडी छाँव के बिना हमारा क्या होगा।

तुम्हारा अवसान उस पुण्य धाम में हुआ जिसे पाने के बाद कोई भी संसार में पुनः नहीं लौटना चाहेगा।

इसीलिए तो महाबली बाली ने भगवान के यह कहने पर कि 'अचल करौ तन तोरा' बाली ने यही जवाब दिया कि 'बार-बार मुनि जतन कराहीं, अंत राम मुख आवत नाही' प्रभु, आप मेरे समक्ष खड़े हैं इससे अच्छी मृत्यु को छोड़कर मैं इस पापमय संसार में नहीं रहना चाहता। भगवान राम ने उसे अपना धाम देकर कृतार्थ किया। वैसे ही उस पुण्य क्षेत्र में प्राण त्यागना तो सर्वथा बैकुण्ठ ही पाना है।

अपने पुण्य कर्मों के प्रभाव से भाभी को शायद यह भी ज्ञात था कि यही उनकी अंतिम यात्रा है जैसे-

'खड़ा द्वार पर कोई डाकिया झाँक जरा सा लेना

हो सकता है लाया होगा तेरा चना चबैना

या दे जाए पी की पाती या फिर कुछ बतलाए

कब तक तेरा दाना पानी कब दाने से जाए'

इसीलिए हरिद्वार जाते समय उसने कह भी दिया था कि अब वापस नहीं आएंगी। धन्य हैं भाभी आपको भावी का ज्ञान भी हो गया था। धन्य आपकी सात्विकता। यह संसार तो हमारा कर्मक्षेत्र यहाँ सत्कर्मी भी होते हैं

तथा दुष्कर्मी भी रहते हैं। सभी के लिए भगवान कृष्ण गीता में कहते हैं 'कर्मण्ये वा धिकारस्ते मा फलेषु कदाचन' कर्म करो फल की चिन्ता मुझ पर छोड़ दो। अच्छा या बुरा निर्णय मैं करूँगा।

जैसे– 'अपनी अपनी नौका लेकर सब सागर में उतरे

पाप पुण्य की पतवारें ले सब सागर से गुजरे

लहरें तो अनुकूल मिली थी किंतु पवन बेगाना

सागर तट भी देख रहा था, जग का खेल पुराना

याद नहीं है दिन बीते हैं टूटा कौन सितारा

कितने डूबे बीच भँवर किनको मिला किनारा'

भाभी आपके सत्कर्मों से इस संसाररूपी भवसागर में आपको किनारा मिला।

भाभी, आपके सत्कर्मों ने इस संसार रूपी भवसागर में आपको किनारा दे ही दिया। प्रणाम है आपको। भगवान कृष्ण की साक्षात कृपा आप पर परिलक्षित है जिसे हम सबने देखा। उस पुण्य धाम में ही आपको किनारा मिला।

आज लगभग साढ़े पाँच वर्ष हो गए आपको परमधाम में निवास करते हुए किन्तु हम सब तो वहीं के वहीं हैं। समय का अंतराल शोक भुलाने के लिए एक मरहम होता है जो बड़े से बड़े घाव को भर देता है।

कब तक शोक मनाएँ उनका कब तक आँसू ढारे

कब तक रोएं दिल ही दिल में करके बंद किवारें

आग लगी है लग जाने दो दिल तो खूब तपेगा

पिघलेगा तब भर जाएंगी दिल की बड़ी दरारें।

मौत के शिकंजे की गाँठ कभी खुलती नहीं और न ही ढीली पड़ती है तब हम असहाय स्थिति को समय के हवाले कर देते हैं या ये कहें कि करना ही पड़ता है।

मुझे याद है सन् 1951 में आप हमारी भाभी बनकर भरारी आईं। मैं भैया (स्व. रविशंकर शुक्ल) के बारात में भी गया था, उसी समय तुम्हारे स्नेहसिक

हाथ मेरे सिर पड़े और मैं जीवन भर आपका कृपा पात्र तथा स्नेह भाजन रहा। मां की ममता भी तुमने दिया। मेरे बचपन को संवारा। मेरे अच्छे नंबरों से पास होने पर स्व. भैया और तुम गौरान्वित होकर सदा ही मेरे हित की बात सोचती थी। अब तो घर ही खाली हो गया, यह सब ममता दुलार सब तम्हारे साथ ही तिरोहित हो गए। तुम्हारे गुणों का बखान कैसे और कितना करूँ अधिक लिखने लगूँ तो यह संस्मरण की काया बहुत बड़ी हो जाएगी। मुंह से क्या बोलूं सब हृदय में अमूल्य धन के जैसे संचित है। जिंदगी की सैकड़ों परिभाषाएँ हैं। किसी चिंतक ने जिंदगी की परिभाषा में ठीक ही कहा है 'जिंदगी क्या है, आओ सोचें और उदास हो जाएँ'। सचमुच में जिंदगी का हश्र उदासी ही तो है। यही सच्चाई भी है।

और अंत में इतना ही...

'आज तुम्हारी याद आई मैं रोया जी भरके

कागज पर अवसाद हमारे नदिया सी छलकें।'

ओ दिव्य ज्योति दिनांक 8/11/2011 को उस हरिद्वार की गायत्री माँ की अखंड ज्योति में तुम विलीन हो गई। तुम धन्य, धन्य, धन्य हो।

पुनः पुण्या को प्रणाम करते हुए–

'ओ जाने वाले हो सके तो लौट के आना

ये घाट ये बाट कहीं भूल न जाना।'

यदि शास्त्रों और पुराणों में पुनर्जन्म का विधान है तो मैं अगले जन्म में तुम्हारे चरण स्पर्श का पुनः लाभ लूँगा।

पुनः पुष्पांजली।

तुम्हारा दर्शन लोभी

पुत्रवत देवर

ओंकार प्रसाद शुक्ला

'ग्राम भरारी (रतनपुर) की विदुषी स्व. श्रीमती इंदिरा शुक्ल'

प्रो. बाकेबिहारी शुक्ल

अकलतरा के पास ग्राम कटनई की बेटी विवाहित होकर भरारी के मालगुजार रविशंकर शुक्ल की पत्नी बनी। गाँव में रहकर भी उनकी साहित्यिक अभिरूचि थी। प्राचीन एवं आधुनिक कवियों की रचनाओं को पढ़ती रहती थी, मेरी पत्नी श्रीमती बीना शुक्ल ने जब उनके साहित्य ज्ञान का उल्लेख किया, तो मैं प्राय: उनसे मिलने उनके गांव जाया करता था, जब भी गया उनको आँगन के खाट में या झूले पर किताब पढ़ते पाया, मैं अपने आप को एक सफल प्राध्यापक मानता हूँ, उनसे भी साहित्यिक संवाद करने में हिचकती नहीं थी। भक्तिकाल और छायावादी कवियों के सौंदर्य बोध पर प्राय: चर्चा करता था, वे बकायदा उद्धरण देकर अपनी बात को पुष्ट करती थीं। वहाँ एक बार राष्ट्रीय सेवा योजना का दस दिवसीय शिविर आयोजित हुआ, सलाह लेने के लिए मैं डॉ. राजन यादव (कार्यक्रम अधिकारी रा.स.यो.डी.पी. विप्र महाविद्यालय बिलासपुर) के साथ उनसे मिलने गया, भाभी जी (इंदिरा शुक्ल) तत्काल राजी हो गयी और सहर्ष सहयोग करने का वचन दिया। वे दस दिन तक रा.स.यो. कि वैचारिक गोष्ठियों में शामिल होती थीं, और रात सांस्कृतिक कार्यक्रमों को देखती थीं, इसका रोचक वर्णन मैंने अपनी कहानी 'छूही के ठूंहा' में विस्तार से किया है। मेरी श्रीमती उन्हें कहानी की नायिका कहकर मजाक करती थी।

वे गायत्री परिवार की समर्पित साधिका थीं, कई बार ऋषिकेश, शांतिकुंज में प्रशिक्षण पा चुकी थीं। अपने बच्चों का जन्मदिन वे दीप यज्ञ से मनाती थी, वे कभी-कभी सेंदरी के गायत्री मंदिर में आती थीं। अखंड ज्योति के लेखों का नियमित अध्ययन, मनन एवं चिंतन करती थी, इस पर भी मेरा उनसे

संवाद चलता था, उनकी साधना शुष्क नहीं थी, वे चुहल करते रहती थीं। मेरी श्रीमती उनकी ननंद थी इसलिए जब भी भेंट होती, गले मिलती। मैं जब कहता कि मुझे आप लोगों के प्रेम से ईर्ष्या हो रही है, मुस्कुराकर कहतीं कि मेरी ननंद आपकी ईर्ष्या शांत कर देगी। वे संपन्न घर की बेटी और समृद्ध घर की बहू थी, फिर भी उनको अहंकार छू तक नहीं पाया था। चार बेटा और एक बेटी छोड़कर वे हरिद्वार के गायत्री यज्ञ के हवन मार्ग में विदा हो गयीं। बहुत बड़ी संख्या में परिजन पूजन उनकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना में शामिल हुए थे, आज भी उनको याद करके मैं प्रीति स्निग्ध हो जाता हूँ। उनको शत्-शत् नमन।

समाप्त

प्रो. बाकेबिहारी शुक्ल
नेहरूनगर बी-5
बिलासपुर

वंदे वेद मातरम्

'महिमा मंडित सुश्री इंदिरा देवी शुक्ला'

डॉ. अनंतधर शर्मा

गायत्रीमंवेदं जननी मं
गायत्री पापनाशिनिम
गायत्रीचारित्र परमानंदनम
छविवंदेय पावन म

भगवान श्रीराम के ननिहाल एवं महामाया की महती कृपा से छत्तीसगढ़ की माटी पर अनेक महान व्यक्ति तथा महिलाओं का जन्म हुआ है। ऐसी ही एक महिमा मंडित महिला का देवर होने का सौभाग्य प्रकृति ने मुझे दिया। उस महिला का जीवन संघर्ष त्याग, जप-तप, धर्म-कर्म और मां गायत्री के प्रति पं. पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य के प्रति समर्पण हमें आज भी जीवन पथ के लिए प्रेरणा दे रही है। उनका यज्ञमय जीवन पुराने स्मृतियों को सदैव आलोकित करता रहता है।

सन् 1957 में मथुरा में गायत्री माता का बहुत बड़ा यज्ञ हवन हुआ। मैंने भरारी में विशेष नारियल, माला, प्रसाद पूज्यनीया भाभी इंदिरा देवी को सादर नमन के साथ प्रदान किया, बस! यहीं से अनूठा चमत्कार प्रारंभ हो गया। भाभी का शुभ, संस्कार जागृति का अद्‌भूत रूप उनमें परिलक्षित होने लगा। मैं आयु में उनसे दो वर्ष छोटा था, पर वे बड़ी बहन मां तुल्य थीं। ग्रीष्मावकाश में मेरा अधिकांश समय भरारी में व्यतीत होता था क्योंकि गौरवशाली शुक्ल परिवार भरारी कलमीरार मेरा मामा गांव है। पूज्य भाई स्व. रविशंकर मुझे अपना छोटा भाई कहते बल्कि पुत्रवत व्यवहार करते थे। इंदिरा इस परिवार में अपनी एक अलग पहचान बना ली थी, इसकी खास वजह उनका साहित्यिक रूझान एवं धर्म-कर्म में रूचि थी। इनके आचरण एवं प्रभा मंडल से पूरे परिवार में न सिर्फ नये गुणों का विकास प्रारंभ हुआ बल्कि उनके पारस के गुणों से ओत-प्रोत होने लगा। बच्चों में, महिलाओं में, कन्याओं में सुसंस्कार विकसित होने लगा, सुख-शांति का संचार होने लगा।

मेरी बड़ी मामी (दुर्गावती) जीवन संघर्ष एवं व्याप्त चुनौतियों की वजह से सख्त और कड़क मिजाज की थी, धीरे-धीरे भाभी के व्यवहार से सरलता की ओर अग्रसित होने लगी थी। संयोगवश, भइया-भाभी में बहुत कम ही वैचारिक मतभेद होते थे, कवि हृदय सागरमन वाला भइया, भाभी को खुश रखने का हरसंभव प्रयास करते थे। दोनों नायक-नायिकाओं का आपसी प्रेम सम्मान देखते ही बनता था, पर कभी मतभेद होते तो मुझे बुलाया जाता और दोनों से मुझे समय-समय पर मान्यता मिल जाती।

भाभी इंदिरा, आये दिन मथुरा, हरिद्वार तीर्थ प्रवास में जाते रहती थीं। अंतिम इच्छा वहीं रहने की थी व वहीं की माटी को आत्मसात करना चाहती थी। अंत में दिनांक 8.11.2011 को उनकी अभिलाषित इच्छा पूरी हुई।

उनका जन्म बैशाख 1937 में हुआ था।

'वृषभलग्नोदये जातके, विप्र गुरू भक्तः प्रियंवदः

गुणाकृति धनी मोरनी, शूरः सर्वजनप्रियः'

... आगे बस इतना कहूँगा... आने वाली पीढ़ियां बड़ी कठिनाई से विश्वास करेंगी कि कटनई की बेटी, भरारी की बहू इंदिरा जैसी महिला का भी जन्म इस माटी में हुआ है।

अपनी यादों के उजालों को आप हमारे पास ही रहने दें

जिंदगी की कोई छोर में कहीं शाम न हो जाए।

पुनश्च...'चंदन है इस देश की माटी

तपोभूमि हर ग्राम, हर नारी देवी की प्रतिमा

बच्चा-बच्चा राम'

--- : ओम :--- शांति

डॉ. अनंतधर शर्मा

अंतर्राष्ट्रीय ज्योतिष

चौबे कॉलोनी, रायपुर

श्रीमती वत्सला शर्मा

महिला ज्योतिषी, रायपुर

पूज्यनीया भाभी जी (जेठानी)

श्रीमती वत्सला शर्मा

जैसा मैंने जाना समझा

आदरणीया भाभी, जेठानी, दीदी स्व. इंदिरा देवी एक मानवीय विभूति सद्‌गुणों को आत्मसात करने की विशेष हंसीय प्रवृत्ति वाली महिला रहीं। बहुत पहले गांव कैसा था, सामाजिक पारिवारिक ढांचा कैसा था उसे, मेरे जैसे सभी रहवासी जानते समझते हैं। बंद दड़बे, सीमित दायरा, अनुशासन, बड़ा परिवार, बड़ी जिम्मेदारी, सीमित गवाह इत्यादि-इत्यादि के होने पर भी उनकी ग्राह्यक्षमता असीमित रही। वे आधुनिकता के प्रति, नवीनता के प्रति सामंजस्य बिठाते आग्रही थीं। सभी के साथ मिल-जुलकर समभाव बनाए रखना, अकेले होने पर अपनी व्यस्तता शुभ कार्यों में लगाये रखती थीं। बच्चों को उच्चगुणीय, शालीन, विनयशील बनाये रखने का संस्कार दिया। भेदभाव से परे, ऊँच-नीच समय में धैर्य के साथ समय का मुकाबला करने का साहस रखने की वृत्ति न सिर्फ अपने बच्चों को दिया बल्कि, अपने परिधि में आने जाने वाले जन सामान्य को भी दिया। हरिद्वार जाते समय हमें भी बताकर गई थीं कि.... 'बहू! अब तुम्हारी चिट्‌ठी का जवाब अज्ञात कारणों से नहीं दे पाऊँगी, भाई नाराज तो नहीं होंगे...'

वास्तव में उनके आराध्य ने उन्हें एहसास करा दिया था कि वह यात्रा अंतिम थी। 8 नवंबर सन् 2011 को ममता का सूरज अस्त हो ही गया। उन्हीं के संस्कारों एवं पुण्य कर्मों से उनके सभी बच्चे सुखी एवं उन्नतशील हैं।

वे जहां कही भी हों... उन्हें शत्-शत् नमन....

द्वारा- श्रीमती वत्सला शर्मा

चौबे कॉलोनी, रायपुर

इंदिरा दीदी

- श्रीकांत शर्मा

चैत्र पूर्णिमा की रात हरिद्वार में गंगाजी के किनारे बैठते ही इंदिरा दीदी स्मृति में कौंध गई। आज से लगभग साढ़े पांच वर्ष पूर्व कार्तिक पूर्णिमा सन् 2011 इंदिरा दीदी का नश्वर अवशेष इसी गंगा जी में समाहित हो अनंत में विलीन हुई थी। उस घटना के बड़े अंतराल के बाद मैं हरिद्वार आया हूँ। इंदिरा दीदी शांति कुंज के चप्पे-चप्पे में अपनी उपस्थिति हमेशा दर्शाती रही हैं। ऐसे अनेक मौके आए जब कभी मैं शांतिकुंज आया इंदिरा दीदी अपने साथ के लोगों के साथ कभी लक्ष्मी हॉल में तो कभी किसी भवन में मिल जाती थीं। निश्च्छल हंसी, गुरू के प्रति समर्पण, देदीप्यमान शांत स्वरुप, ढेर सारे आशीर्वचनों के साथ दीदी हमेशा प्रगट होती रहती थीं।

गुरुदेव के कार्य में समर्पण भाव से जीवनपर्यंत जुड़ी रहीं, सही मायने में गुरुदेव के अंग अवयव की तरह, सभी चिंता से मुक्त होकर, अधिकाधिक श्रम व समर्पण करने में अग्रणी रहीं। काम बने बिगड़े इस सबसे अप्रभावित रहकर समर्पण भाव को दिनोंदिन बढ़ाती रहीं, अपने इसी भाव के साथ उस स्थान तक पहुंची जिसे अद्‌भुत, अनुपम असाधारण कहा जा सकता है। गुरुदेव के जन्मशती के अवसर पर दिव्य सता को सर्वस्व न्यौछावर कर उसमें एकाकार हो गईं। अपने जीवनकाल में विश्राम की बात न सोचकर अहर्निश स्वयंसेवक के रूप में पूर्णरूपेण अपने को खपाकर अपना योगदान प्रस्तुत किया। श्रम, मनोयोग, त्याग व निरहंकारिता ही किसी को ऊँचा बनाती है, दीदी का व्यक्तित्व इन्हीं सबका सम्मिल्लित स्वरुप रहा।

मैं अपनी मां से पूछता था कि इंदिरा दीदी मिशन में कैसे जुड़ीं... एक बार दीदी से भी पूछ बैठा... इंदिरा दीदी, बोली रतन फुफू (मेरी मां) और फूफा जी ही प्रथम गुरू रहे हैं, जो इस जुड़ाव का माध्यम बने। दीदी में प्रारंभ से ही

दृढ़ता, संकल्पशक्ति, आस्था प्रचुर मात्रा में रही। मां बताती थीं कि प्रारंभ में उनको विरोध भी सहना पड़ता था, किंतु उनकी भक्ति की तीव्रता से गुरुदेव के अखंडदीप से एक प्रदीप अपने आंगन में भी उज्ज्वलित कर सकीं, उसे जीवन पर्यन्त प्रदीप्त रखीं और सबके लिए प्रेरणा बनी।

बचपन में 'भरारी' का परिचय गन्नारस के साथ हुआ था। मां की मौसी (मोंगरा बाई, बनरहिन दाई) गांव से गन्ने का रस गंज में भिजवाती थीं, साथ में गुड़ भी आ जाया करता था। इंदिरा दीदी का आशीर्वाद उसे गन्ने के साथ रस सा मिठास भरा और भरपूर मात्रा में मिलता रहा।

इंदिरा दीदी के जन्मस्थली ग्राम कटनई जाने का अवसर बचपने में मिला था। ऐसी धुंधली सी याद है कि पीछे के दरवाजे से एक संकल्प शक्ति प्रकृति के इसी स्वरुप का प्रतिदान था।

इंदिरा रूपी नश्वर शरीर को धारण करने वाली उस उत्कृष्ट आत्मा को यह विश्वास दिलाना चाहेंगे कि उनकी आशा, अपेक्षा और विश्वास के अनुरुप हम सब उनके दिखाये रास्ते में कदम बढ़ाते रहेंगे...

दीदी को कोटिशः श्रद्धासुमन एवं श्रद्धांजलि समर्पित...

- श्रीकांत शर्मा

बिलासपुर

ममतामयी मां की प्रतिमूर्ति माता इंदिरा देवी शुक्ला

मां गायत्री को समर्पित व्यक्तित्व मां इंदिरा देवी शुक्ल

- डॉ. हेमंत कौशिक

पूज्यनीय माता इंदिरा देवी शुक्ला की सरल सहज एवं सौम्य चेहरा आज भी मुझे जस का तस सजीव अनुभूति प्रदान करते रहती है, मैं उस क्षण को कभी भूल नहीं सकता, ऐसे लगता है कि वह स्वाभाविक रूप से नींद में सोई हुई हैं।

मैं 7 नवंबर से 11 नवंबर तक आयोजित पूर्णाहूति के अवसर पर हर की पौड़ी हरिद्वार नश्वर केंद्रीय चिकित्सालय में डॉ. वी.वी. निषाद के साथ प्रतिदिन प्रात: 8 बजे से 2 बजे तक आयुर्वेद कक्ष में सेवा देते थे। दिनांक 8 नवंबर यज्ञ के प्रथम दिन तीसरी पाली में हम दोनों यज्ञ कर केंद्रीय चिकित्सालय पहुंचे तो वहां का माहौल कुछ अलग नजर आया, आपात स्थिति जैसे भागमदौड़ की स्थिति भी मुझे देखते हुए डॉ. अरुण मढ़रिया ने कहा कि डॉ. साहब यज्ञ की दूसरी पाली में भगदड़ के चलते कुछ मरीज आपात स्थिति में आए हैं, तत्काल प्राथमिक उपचार में जुट जाएं, हम दोनों आवश्यक उपचार व्यवस्था बनाने में जुट गए। तब तक हमें ये पता नहीं था कि कुछ परिजनों की भगदड़ के दौरान भीड़ में दबने से मृत्यु भी हो चुकी है।

कुछ देर बाद शांतिकुंज कार्यकर्ता आदरणीय श्री सूर्यकांत साहू जी मेरे पास आए और मुझे बुलाकर पास के एक टेंट अस्थायी चिकित्सालय में ले गए। वहां जाकर मैं हतप्रभ रह गया, वहां लगभग 10-11 परिजनों की मृत शरीर रखे हुए थे। उन्होंने कहा कि इसमें कोई परिचित तो नहीं है देख के बताइये ताकि उनके घरवालों को सूचित कर दें। मैं बारी-बारी सभी के चेहरे व परिचय पत्र को देखता गया और जब मैं माता जी के चेहरे को देखा एकदम हतप्रभ रह गया। विश्वास ही नहीं हो रहा था बार-बार परिचय पत्र

श्रीमती इंदिरा देवी शुक्ल बिलासपुर छत्तीसगढ़ देखकर भी विश्वास नहीं हो रहा था। शांत युद्ध में चिर निद्रा में आराम से सो रही थीं, यकीन भी नहीं हो रहा था। तुरंत उनके पुत्र साथी डॉ. प्रदीप शुक्ला जो कि स्वयं पंत नगर चिकित्सालय में सेवा दे रहे थे, फोन कर सूचित किया कि मां यज्ञ के दौरान भगदड़ में घायल हो गई हैं, आप तत्काल केंद्रीय चिकित्सालय पहुंचें। डॉ. शुक्ला जी के आते ही सब्र का बांध टूट पड़ा, उनके कंधे से लिपट रो पड़ा और बस इतना ही कहा कि माता जी परम पूज्य गुरुदेव के चरणों में विलीन हो गईं और तब पता चला कि वो तो घर से ही पूर्व तैयारी कर अंतिम यात्रा के लिए घर से निकल पड़ी थीं, शायद उन्हें आभास हो गया था। अब गुरुजी के चरणों में प्रणाम करने का क्षण आ गया है।

पू. माताजी से जब भी मिला अत्यन्त स्नेहमयी ममता की मूर्ति सादगीपूर्ण जीवन सतत् साधनारत, गुरुजी की झोली कंधे में .... जब भी समय मिला साधनारत् हो जाती थीं। दिखने में दुबली-पतली काया पर गजब की संकल्प शक्ति थी, पूरे क्षेत्र में अलख जगाती थीं। हर कार्यक्रमों में प्रेरणा का कार्य करतीं तथा अपने अनुष्ठान में रत रहतीं एवं अपने जीवन में कई अनुष्ठान/ गायत्री पुरश्चरण संपन्न किए। जब भी मन हुआ शांति कुंज पहुंच जातीं एवं वो अनुष्ठान में रत रहतीं, खाने-पीने सोने की परवाह नहीं करती थीं, जानकारी होने पर भाई सूर्यकांत जी यहीं के होने के नाते उनका ख्याल रखते थे।

पू. माता जी सही मायने में वानप्रस्थ जीवन जीती थीं, घर-परिवार चारों पुत्र एवं एक पुत्री की पारिवारिक जिम्मेदारी को पूर्ण कर वह गुरुजी के कार्यों में रच-बस गई थीं। बस गुरुजी का ..... पूरे क्षेत्र में घूमते रहती थीं। सहज सरल रूप बिना कोई सुविधा के सामान्य परिजन जैसे रहती थीं, हर दिन प्रेम से भरा जो भी मिलता आत्मीयता से .... ढेरों आशीष देतीं, प्रेम से सरोबार कर देती थीं, आज भी वह जीवंत लगती हैं... शत्-शत् नमन....

- डॉ. हेमंत कौशिक

बिलासपुर

आदरांजली

- श्रीमती रेखा चंद्रशेखर शुक्ला

दीवान परिवार की सबसे बड़ी पुत्री होने के कारण पूरा परिवार नोनी शब्द से पुकारते थे। परिवार के सभी मांगलिक कार्यक्रम में नोनी-दीदी का बड़ा योगदान रहता था एवं हँसते हुए संपन्न कराती थीं। साथ वे उसे भजन-कीर्तन, सोहर व शादी के गाने भी अच्छी गाती थीं। एक दिन यह सब कार्यक्रम निपटाकर जाने लगीं, तो मैं पूछ बैठी की रात को कहाँ जा रही हो, कहने लगी माला जपकर आ रही हूँ। तो मैंने पुनः दोहराई, सूर्य अस्त हो गया है कैसे गायत्री मंत्र जाप करोगी। तो कहने लगी कौन कहता है सूर्य अस्त हो गया, सूर्य कभी अस्त नहीं होता है। फिर मंत्र जाप के लिए कोई समय या स्थान की जरूरत नहीं रहती।

घर में जब भी कार्तिक देवउठनी एकादशी मनाते थे। उस खुशी के मौके पर वह मुझे जरूर याद करती थीं। आज रेखा का भी जन्म दिन है। वह जब भी मिलतीं उसे देखकर सभी उससे आशीर्वाद लेने उससे लिपट जाते थे। वह गद्‌गद् मन से आशीर्वाद देती थीं। मैं उनसे मजाक करती थी। आज नोनी-दीदी आशीर्वाद देने में कम कर दी तो वह आशीर्वाद को पुनः दोहराती थीं।

नोनी-दीदी को देखकर घर के बहू, बेटी, बच्चे सभी खुश होते थे। नोनी-दीदी सदा धर्म के बारे में व गुरूजी, माताजी, गंगा गायत्री देवी के बारे में चर्चा करतीं। सुनकर बड़ा आनंद आता था। आज उसी के प्रेरणा से सबेरे सात बजे से गायत्री मंदिर के यज्ञ शाला के पास जाकर बैठ जाती हूँ। ऋषि, साधु, संत की तरह उसकी वाणी में मिठास था, सभी के साथ समान व्यवहार रखती थी। मां गायत्री के आशीर्वाद से नोनी-दीदी दीवान परिवार की लाड़ली बेटी थीं। आई हुई मृत्यु को कोई नहीं टाल सकता, यह सारा

प्रपंज्य नाशवान् क्षण भर रहने वाला है तथा अत्यंत दु:ख देने वाला है। देवी मां गंगा गायत्री की विचार कर भगवान भजन करते हुए गंगा के पवित्र जल में समा गईं, परंतु आज भी ऐसा लगता है नोनी दीदी सूक्ष्म रूप से हमारे बीच में उपस्थित हैं। तीर्थयात्रा करने के उद्देश्य से गई थीं। अपनी यात्रा सम्मानपूर्वक पूर्ण कर ली।

दीदी को कोटि-कोटि प्रणाम

द्वारा - श्रीमती रेखा चंद्रशेखर शुक्ला

समता कॉलोनी, रायपुर (छ.ग.)

बहन नोनी

- श्रीमती किरण उपाध्याय

दीदी भइया की प्यारी नोनी
कटनई परिवार की गरिमा नोनी
पंद्रह बहनों की दुलारी नोनी
नौ भाइयों की राखी नोनी
दीवान परिवार की अभिमान नोनी
भरारी की थी शान नोनी
काका काकी की मान नोनी
आशीर्वाद की खान नोनी
तप अध्यात्म की पहचान नोनी
अंतिम में हरिद्वार की नोनी
गंगा और गायत्री की नोनी
ऊफ! करिश्माई तुम्हारी अंतिम यात्रा नोनी
सचमुच! अद्‌भुत इंदिरा नोनी

- श्रीमती किरण उपाध्याय
श्रीराम विशाल उपाध्याय
समता कॉलोनी रायपुर

You've Just Finished your Free Sample

Enjoyed the preview?

Buy: http://www.ebooks2go.com